शिव त ांडव स्तोत्रम्

शिव त ांडव स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपाववतस्थले
गलेवलंब्य लंबितां भुजंगतुंगमाललकाम् ।
डमड्डमड्डमड्डमन्निि ादवड्डमवयं
चकार चंडतांडवं तोितु िः लिवः लिवम् ॥ 1 ॥

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निललंपनिर्वरी-
-ववलोलवीचवल्लरीववराजमाि मूर्वनि ।
र्गद्र्गद्र्गज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
ककिोरचंद्रिखरे रनतः प्रनतक्षणं मम ॥ 2 ॥

र्रींद्रिंदिदीववलासिंर्ुि िंर्ुर
स्फुरद्दगंतसंतनतप्रमोदमाि माि से ।
कृपाकटाक्षर्ोरणीनिरुद्र्दुर्वरापदद
क्वचचद्दगंि रे मिो ववोिदमेतु वस्तुनि ॥ 3 ॥

जटाभुजंगवपंगलस्फुरत्फणामणणप्रभा
कदंि कुंकुमद्रवप्रललप्तददग्वर्ूमुखे ।
मदांर्लसंर्ुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मिो ववोिदमद्भुतं बिभतुव भूतभतवरर ॥ 4 ॥

सहस्रलोचिप्रभृत्यिेषलेखिेखर
प्रसूि र्ूलर्ोरणी ववर्ूसरांनिपीठभूः ।
भुजंगराजमालया निि द्र्जाटजूटक
चियै चचराय जायतां चकोरिंर्ुि ेखरः ॥ 5 ॥

ललाटचत्वरज्वलद्र्ि ंजयस्फुललंगभा-
-निपीतपंचसायकंि मन्निललंपायकम् ।

सुर्ामयूखलेखया ववराजमाि ि ेखरं
महाकपाललसंपदेलिरोजटालमस्तु िः ॥ 6 ॥

करालफालपट्टदटकार्गद्र्गद्र्गज्ज्वल-
द्र्ि ंजयार्रीकृतप्रचंडपंचसायके।
र्रींद्रिंदिदीकुचाग्रचचत्रपत्रक-
-प्रकल्पैकलिल्पनि बत्रलोचिे मनतमवम ॥ 7 ॥

िवीिमेघमंडली निरुद्र्दुर्वरस्फुरत्-
कुहूनििीचथीतमः प्रिंर्िंर्ुकंर्रः ।
निललंपनिर्वरीर्रस्तोतु कृवत्तलसंर्ुरः

कलानिर्ाििंर्ुरः चियं जगद्र्ुरंरः ॥ 8 ॥

प्रफुल्लीलपंकजप्रपंचकाललमप्रभा-
-ववलंबिकंठकंदलीरुचचप्रिद्र्कंर्रम् ।
स्मरन्छिदं पुरन्छिदं भवन्छिदं मखन्छिदं
गजन्छिदांर्कन्छिदं तमंतकन्छिदं भजे ॥ 9 ॥

अगवसवमंगलाकलाकदंिमंजरी
रसप्रवाहमार्ुरी ववजृंभणामर्ुव्रतम् ।
स्मरांतकंपुरांतकंभवांतकंमखांतकं
गजांतकांर्कांतकंतमंतकांतकंभजे ॥ 10 ॥

जयत्वदभ्रववभ्रमभ्रमद्भुजंगमश्वस-
-द्ववनिगवमत्रमस्फुरत्करालफालहव्यवाट् ।
चर्लमद्चर्लमद्चर्लमध्विनमृदंगतुंगमंगल
ध्वनिरमप्रवनतवत प्रचंडतांडवः लिवः ॥ 11 ॥

दृषद्ववचचत्रतल्पयोभुवजंगमौन्क्तकस्त्रजोर्-
-गररष्ठरत्िलोष्ठयोः सुहृद्ववपक्षपक्षयोः ।

तृष्णारववंदचक्षुषोः प्रजामहीमहेंद्रयोः
समं प्रवतवयनमिः कदा सदालिवं भजे ॥ 12 ॥

कदा निललंपनिर्वरीनिकुंजकोटरे वसि्
ववमुक्तदुमवनतः सदा लिरःस्थमंजललं वहि् ।
ववमुक्तलोललोचिो ललाटफाललग्िकः
लिवेनत मंत्रमुछचरि् सदा सुखी भवाम्यहम् ॥ 13 ॥

इमं दह नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं
पठनस्मरनरुवनिरो ववुिद्चर्मेनतसंततम् ।
हरे गुरौ सुभन्क्तमािु यानत िानयथा गनतं
ववमोहिंदह देदहिां सुिंकरस्य चचंतिम् ॥ 14 ॥

पूजावसािसमये दिवक्त्रगीतं यः
िंभुपूजिपरं पठनत प्रदोषे ।
तस्य न्स्थरां रथगजेंद्रतुरंगयुक्तां
लक्षमीं सदैव सुमुणखं प्रददानत िंभुः ॥ 15 ॥